THE FIRE

Quarterly Bulletin of The Spiritual Life Development Department

THE SALVATION ARMY

India Northern Territory

NEWSBULLETIN

जनवरी से मार्च 2026

फल लाना

कमिश्नर वानलालफेला
टैरिटोरियल कमांडर

यूहन्ना 15:5 में, यीशु ने कहा, “मैं दाखलता हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, तो तुम बहुत फल लाओगे।” ये शब्द हमें याद दिलाते हैं कि मसीही जीवन में फलदायक होना हमारी अपनी ताकत या काम का नतीजा नहीं है, बल्कि मसीह के साथ हमारे जुड़ाव का नतीजा है। एक डाली फल पैदा करने के लिए संघर्ष नहीं करती; वह बस बनी रहती है। उसका जीवन, पोषण और शक्ति दाखलता से आती है। इसी तरह, हम तब आत्मिक फल लाते हैं जब हम मसीह के साथ लगातार संगति में रहते हैं—हर दिन उस पर निर्भर रहते हैं, उसकी आवाज़ सुनते हैं, और आज्ञाकारिता में चलते हैं।

जिस फल की बात पवित्रशास्त्र करता है, वह केवल बाहरी सफलता या दिखाई देने वाली उपलब्धियाँ नहीं हैं। यह मसीह का वह आंतरिक चरित्र है जो हम में बनता है: प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और

संयम। ये पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित जीवन के फल हैं, और जैसे-जैसे हम खुद को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हैं, ये हम में धीरे-धीरे बढ़ते हैं।

फल लाने का अर्थ दूसरों को आशीष देना भी है। पेड़ के फल का उद्देश्य पेड़ के लिए नहीं होता, बल्कि उन लोगों के लिए होता है जो उसके पास आते हैं। इसी तरह, हमारे जीवन से बहने वाला आत्मा का फल हमारे आस-पास की दुनिया के लिए पोषण, प्रोत्साहन और आशा बन जाता है। हमारे घरों, कार्यस्थलों, कलीसियाओं और समुदायों में, लोगों को हमारे माध्यम से मसीह के अनुग्रह का अनुभव होना चाहिए।

एक टैरिटरी के रूप में, आइए हम मसीह में बने रहने के लिए खुद को फिर से समर्पित करें। आइए हम प्रार्थना का जीवन जिएँ, खुद को परमेश्वर के वचन में डुबो दें, और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के प्रति आज्ञाकारी बने रहें। जब हम उस में बने रहते हैं, तो वह वादा करता है कि हमारा जीवन फलों से भर जाएगा—ऐसा फल जो बना रहता है, ऐसा फल जो परमेश्वर की महिमा करता है, और ऐसा फल जो उसके राज्य को आगे बढ़ाता है।

आइए हम उन फलों को लाते हुए आगे बढ़ें जो दुनिया के सामने मसीह को प्रकट करते हैं।

परमेश्वर आप सभी को बहुतायत से बरकत दे। आमीन।

नए साल का जश्न और 2026 की टैरिटोरियल थीम का उद्घाटन

पूरी टैरिटरी में नए साल 2026 का जश्न बड़ी खुशी के साथ मनाया गया। दिल्ली सिटाडेल कोर में टैरिटोरियल कमांडर कमिश्नर वनलालफेला ने परमेश्वर का वचन सुनाया। हर जगह लोगों ने साल 2025 के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया और 2026 का स्वागत किया। सभी कोरों में प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गईं, जिसके बाद सहभागिता भोज हुआ और परमेश्वर का वचन सुनाया गया। मेरी कामना है कि यह नया साल आप सभी के लिए ढेर सारी खुशियाँ लेकर आए। परमेश्वर आप सभी को आशीष दे। आमीन।

'फल लाना' (Bearing the Fruits) 2026, यूहन्ना 15:3-8। इस टैरिटोरियल थीम का उद्घाटन 1 जनवरी 2026 को हमारे सम्मानित टैरिटोरियल कमांडर, कमिश्नर वनलालफेला ने दिल्ली सिटाडेल कोर में किया। सभी सिपाहियों और अफसरों ने थीम का स्वागत किया और खुद को इस थीम का अनुकरण करने और उसका पालन करने के लिए समर्पित किया। पूरी टैरिटरी में थीम के उद्घाटन के माध्यम से सभी मुक्ति फौजियों को भरपूर आशीषें मिलीं। परमेश्वर हम सभी को इस थीम के अनुसार काम करने की सामर्थ्य और आशीष दे। आमीन।

प्रार्थना सप्ताह 18 से 25 जनवरी 2026

दिल्ली सिटाडेल कोर में जनवरी 2026 में यूनिटी ऑक्टेव सप्ताह मनाया गया जिसमें विभिन्न कलीसियाओं के मुख्य पादरियों और सदस्यों ने शिरकत की तथा प्रार्थना में भाग लिया।

टैरिटोरियल लीडर्स के साथ कैडेट्स का आत्मिक दिवस

सत्र 'वाचा के रक्षक' (Keepers of the Covenant) के लिए आत्मिक दिवस 30 जनवरी 2026 को बरेली के ट्रेनिंग कॉलेज में हमारे आदरणीय टैरिटोरियल कमांडर, कमिश्नर वनलालफेला और TPWM, कमिश्नर रोपारी द्वारा सभी कैडेट्स और ट्रेनिंग कॉलेज के कर्मचारियों के साथ आयोजित किया गया। कैडेट्स और कर्मचारियों को SALT लर्निंग सेंटर, कोलंबो से 'यीशु के साथ बैठना' (Sit down with Jesus) कोर्स के तहत प्रमाण पत्र प्राप्त हुए। इस बार का आत्मिक दिवस कैडेट्स के लिए बहुत खास था, क्योंकि यह दो साल के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अंतिम आत्मिक दिवस था। टैरिटोरियल कमांडर, कमिश्नर वनलालफेला ने एक शक्तिशाली सन्देश दिया, और सभी कैडेट्स ने दया-आसन (Mercy Seat) पर आ कर सेवा कार्य को जारी रखने के लिए परमेश्वर से सामर्थ्य माँगी।

कमिश्नर रोपारी खुपचावांग ने कैडेट्स को आशीष दी और उनके लिए विशेष प्रार्थना की। परमेश्वर सभी कैडेट्स, ट्रेनिंग प्रिंसिपल और पूरे स्टाफ को आशीष दे। आमीन।

होम लीग रैलियाँ - 2026

फरवरी का महीना सभी महिलाओं के लिए बहुत ही आशीष भरा होता है। इन दिनों के दौरान, सभी महिलाएँ होम लीग रैलियों की तैयारी में जुटी रहती हैं। पूरी टैरिटरी में डिविज़नल स्तर पर होम लीग रैलियों की शुरुआत हुई। होम लीग रैलियों को दो समूहों में बाँटा गया: पहला समूह - TPWM और THLS; और दूसरा समूह - TSWM और सिल्वर स्टार सेक्रेटरी। इनकी शुरुआत 3 फरवरी को भुवनेश्वर से हुई और समापन दिल्ली सिटाडेल कोर में हुआ।

परमेश्वर के वचन का प्रचार TPWM कमिश्नर रोपारी और TSWM लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा द्वारा किया गया।
होम लीग सदस्यों के लिए बाइबल वचन पाठ याद करने हेतु यूहन्ना 15:6-7 का अंश निर्धारित किया गया था। सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक वचन पाठ किया, और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार भी रखे गए थे। सभी महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया और परमेश्वर के वचन से उन्हें गहरी संतुष्टि प्राप्त हुई। परमेश्वर हमारी TPWM, TSWM, उनकी पूरी टीम और हमारी सभी HL (होम लीग) महिलाओं को आशीष दे। आमीन।

लेंट के दिनों की प्रार्थना सभाएँ - 18 फरवरी 2026 से

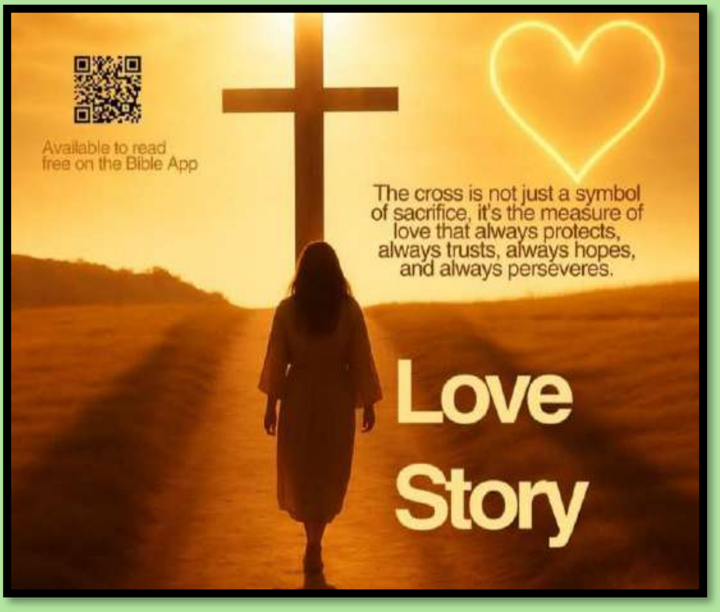

18 फरवरी 2026 को 'ऐश वेडनेसडे' (राख का बुधवार) से शुरू होकर, पूरी टैरिटरी में 'लेंट' के दिनों की अवधि मनाई जा रही है; जिसका समापन अगले महीने अप्रैल में 'गुड फ्राइडे' और 'ईस्टर' के साथ होगा। इस साल हमें IHQ से "लेंट लव स्टोरी" (Lent Love story) के खास संसाधन मिले, जिनका पालन पूरी टैरिटरी में किया जा रहा है। हर सिपाही और अनुयायी के घर में रोज़ाना 'कॉटेज मीटिंग' (छोटे समूह की प्रार्थना सभाएँ) आयोजित की जा रही हैं। लोग उपवास के साथ प्रार्थना कर रहे हैं। यह इस टैरिटरी के 'मुक्ति फौजियों' (Salvationists) के आत्मिक विकास के लिए एक धन्य समय है। परमेश्वर हमारे सिपाहियों और साथियों को भरपूर आशीष दे।

उपवास

उपवास परमेश्वर से मेल मिलाप का एक साधन है। उपवास परमेश्वर की दृष्टि में स्वयं को सचमुच नम्र बनाने का एक बाइबल आधारित तरीका है। उपवास पवित्र आत्मा को आपकी सच्ची आत्मिक स्थिति को प्रकट करने में सक्षम बनाता है जिसके परिणामस्वरूप पश्चाताप और परिवर्तित जीवन प्राप्त होता है। उपवास के द्वारा हम अपने संबंध परमेश्वर के साथ और भी मजबूत कर सकते हैं। हमारे जीवन में बहुत सारी ऐसी भी परिस्थितियां होती हैं, जिससे निकलना हमारे लिए मुश्किल होता है पर उसका हल सिर्फ उपवास और प्रार्थना से निकलता है।

- उपवास कैसे होना चाहिए?
- परमेश्वर कैसे उपवास को पसंद करता है?
- उपवास रखना क्यों जरूरी है?

जब हम उपवास रखें तो मूढ़ लोगों की तरह उदास होकर न बैठें बल्कि परमेश्वर में सदा आनन्दित रहें और आत्मा में मजबूत बनें। (मत्ती 6:16-18) में यीशु बताते हैं कि उपवास गुप्त रूप से किया जाना चाहिए ताकि वह परमेश्वर के सामने हो न कि इंसानों के सामने। उपवास नम्रता और आनंद के साथ

करना चाहिए और उसके साथ परमेश्वर का अध्ययन भी शामिल होना चाहिए।
परमेश्वर ऐसा उपवास पसंद करता है जिससे नम्रता, पश्चाताप और परमेश्वर पर निर्भरता हो, न कि अहंकार या दिखावा, ये उपवास स्वयं को परमेश्वर के करीब लाने, उसकी इच्छा जानने और बुराइ से दूर रहने के लिए किया जाता है ताकि परमेश्वर अपनी महिमा प्रकट कर सके और व्यक्ति के जीवन में पवित्रता और मार्गदर्शन प्रदान कर सके। हमारे जीवन में ऐसे बंधन हैं जो केवल उपवास से ही टूट सकते हैं। उपवास परमेश्वर से गहरा संबंध बनाने में मदद करता है। उपवास हमारे जीवन में हर असंभव चीज़ को संभव करता है, जैसे हम रानी एस्तेर के बारे में पढ़ते हैं, जब उसके कुल पर परेशानी आई तो उसने उपवास रखा और प्रार्थना के साथ परमेश्वर के सामने गयी। तब परमेश्वर ने उसे श्रेष्ठ बुद्धि से परिपूर्ण किया और परमेश्वर ने उसे अपने कुल के लिए एक आशीष का कारण ठहराया। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने जीवन में वो उपवास रखें, जो परमेश्वर को पसंद आये और हम आत्मिकता में बढ़ते जाएं।
प्रभु आप सभी को आशीष दे। आमीन।

मेजर रोमा कमल मसीह
मैक रॉबर्ट हॉस्पिटल धारीवाल

विश्व प्रार्थना दिवस - 6 मार्च 2026

6 मार्च 2026 को पूरी टैरिटरी में 'विश्व प्रार्थना दिवस' (World Day of Prayer) बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस वर्ष का कार्यक्रम नाइजीरियाई महिलाओं (बहनों) द्वारा तैयार किया गया था और यह मत्ती 11:28 पर आधारित था: 'मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'।

विश्व प्रार्थना दिवस की सेक्रेटरी ने दिल्ली सिटाडेल कोर में विश्व प्रार्थना दिवस की सभा की अगुवाई की। हर डिवीजन और कोर में, विश्व प्रार्थना दिवस की सभा की अगुवाई कोर अफसरों और DDWMs ने किया। सभी महिलाओं ने इसमें भाग लिया और प्रभु से महान आशीषें प्राप्त कीं। परमेश्वर सभी महिलाओं को आशीष दे, और विशेष रूप से नाइजीरियाई महिलाओं को आशीष दे।

आमीन।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 8 मार्च 2026

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस सम्पूर्ण टैरिटरी में बड़े आनन्द के साथ मनाया गया। दिल्ली सिटाडेल कोर में लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुद्दा ने परमेश्वर का वचन पेश किया जो दबोरा की ज़िन्दगी पर आधारित था। ये दिन सभी बहनों और महिलाओं के लिए बड़ा आशीष भरा रहा।

गुड फ्राइडे और ईस्टर के उपलक्ष में 24x7 चेन प्रार्थना - 15 से 22 मार्च 2026

हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि जिसने ये समय दिया कि हम इस तरह की चेन प्रार्थना का आयोजन कर सकें। चेन प्रार्थना तो हम लोग किया करते थे लेकिन पहली बार पूरी तरह टैरिटरी में 24X7 मतलब 168 घंटे, पूरे हफ्ते की चेन प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस चेन प्रार्थना में हर कोर और इन्स्टिट्यूशन को एक एक घंटा बांट दिया गया था और यह चेन प्रार्थना 15 तारीख, रविवार दोपहर 2:00 बजे शुरू हुई और 22 तारीख दोपहर 2:00 बजे समाप्त हुई। चेन प्रार्थना में सभी ऑफिसर, सिपाहियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और सबने विशेष प्रार्थना विषयों के लिए प्रार्थनाऐं कीं। पूरी टैरिटरी के लिए भी प्रार्थनाएँ की गईं। इस चेन प्रार्थना को बड़ी शांति से मनाया गया। परमेश्वर हमारे अगुवों को बहुत आशीष दे, जिनके द्वारा इस तरह का कदम उठाया गया और यह चेन प्रार्थना संभव हो पाई। परमेश्वर सभी अफसर साथियों को और सिपाहियों को आशीष दे। हम INO, SLD डिपार्टमेंट के प्रोत्साहन के लिए विशेष धन्यवादी हैं। परमेश्वर SLD डिपार्टमेंट को बरकत दे। आमीन।

कैडेट्स का ऑर्डिनेशन, कमीशनिंग और ग्रेजुएशन
'कीपर्स ऑफ़ द कवनेंट' सत्र 2024–2026
14 और 15 मार्च 2026, बरेली सेंट्रल कोर, बरेली

कैडेट्स की वाचा (Covenant) सभा

इस सभा का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल इमैनुएल मसीह ने किया, जिन्होंने 'कीपर्स ऑफ़ द कवनेंट' सत्र के कैडेट्स का परिचय कराया। लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने विशेष प्रार्थना की। सेवानिवृत्त कमिशनर सैमुअल चरन ने 1 तीमुथियुस 3:1 पर आधारित कैडेट्स के लिए उत्साहवर्धक शब्द कहे। इसके बाद, लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश मसीह की प्रार्थना के उपरांत, कमिशनर वनलालफेला ने बाइबल का प्रभावशाली संदेश दिया; उन्होंने कैडेट्स से आग्रह किया कि वे चुनौतियों के बीच भी विश्वासयोग्य बने रहें और परमेश्वर तथा 'मुक्ति फ़ौज' के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को बनाए रखें।

इस प्रेरणादायक संदेश को सुनकर, कैडेट्स 'दया-आसन' पर घुटना नशीन हुए और अपनी 'वाचा' तथा 'वचनबद्धताओं' पर हस्ताक्षर किए; इस प्रकार उन्होंने स्वयं को 'मुक्ति फ़ौज' के सिद्धांत के प्रति, और आत्माओं को बचाने, संतों को आत्मिक रूप से विकसित करने तथा पीड़ित मानवता की सेवा करने के आजीवन सेवकाई कार्य के प्रति समर्पित कर दिया।

फिर उसी दिन शाम 6 बजे 'पेजेंट नाइट' (सांस्कृतिक संध्या) का आयोजन हुआ, जिसे अगुवों, अफसरों, प्रशिक्षण महाविद्यालय के कर्मचारियों, कैडेट्स के परिवारों और कोर सदस्यों की एक विशाल मंडली की उपस्थिति में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम का नेतृत्व मेजर राजकुमार गिल ने किया, और इसका औपचारिक उद्घाटन कमिशनर वनलालफेला ने किया; उन्होंने रिबन काटकर इस संध्या का शुभारंभ किया।

कैडेट्स ने विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं, जैसे—गीत, नृत्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आदि। इस सभा का समापन चीफ सेक्रेटरी लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन मुड्डा द्वारा की गई प्रार्थना के साथ हुआ।

ऑर्डिनेशन, कमीशनिंग और ग्रेजुएशन

अगले दिन, 15 मार्च 2026 को ' ऑर्डिनेशन और कमीशनिंग की सभा' आयोजित की गई। इस सभा की अगुवाई चीफ सेक्रेटरी, लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन मुड्डा ने की। ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल, लेफ्टिनेंट कर्नल राजकुमार ने 'कीपर्स ऑफ़ द कवनेंट सत्र' की संक्षिप्त सत्र-रिपोर्ट प्रस्तुत की। कमिशनर वनलालफेला ने ऑर्डिनेशन और कमीशनिंग की रस्म अदा की। 'विश्वास की घोषणा' (Declaration of Faith) के उपरांत, कैडेट्स ने अपने प्रमाण-पत्र और नियुक्तियाँ प्राप्त कीं, और इस प्रकार वे 'लेफ्टिनेंट' बने। लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने विशेष प्रार्थना की। टैरिटोरियल कमांडर ने 'महान आदेश' (Great Commission) पर एक शक्तिशाली संदेश दिया, जिसमें उन्होंने नए लेफ्टिनेंटों से आग्रह किया कि वे: टूटे हुए दिलों को चंगा करें, अंधेरे में डूबे लोगों तक रोशनी पहुँचाएँ, मसीह के अधिकार के अधीन होकर सेवा करें, और निडर होकर प्रचार करें तथा चेले तैयार करें। कैडेटों के बच्चों को भी प्रशंसा पत्र दिए गए। सभा का समापन सेवानिवृत्त कमिशनर सैमुअल चरन ने प्रार्थना के साथ किया।

लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा ने माता-पिताओं को 'ऑर्डर ऑफ़ द सिल्वर स्टार' प्रदान किया। नए लेफ्टिनेंटों ने अपनी B.Th. की डिग्रियाँ (ATA से मान्यता प्राप्त) कमिशनर वनलालफेला से प्राप्त कीं, जिसमें ट्रेनिंग प्रिंसिपल ने उनका सहयोग किया। चीफ सेक्रेटरी ने एक प्रेरणादायक संदेश साझा किया, जिसका मुख्य विषय था: "मन फिराओ, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।"
इस सभा में लगभग 150 सिपाही और साथी उपस्थित थे। समापन गीत के दौरान, कई लोगों ने 'दया-आसन' (Mercy Seat) पर आकर स्वयं को प्रभु को समर्पण किया। टैरिटोरियल कमांडर ने प्रार्थना और आशीष वचन के साथ सभा का समापन किया।

परमेश्वर सभी नए लेफ्टिनेंटों और 'मुक्ति फ़ौज उत्तरी भारत टैरिटरी' को आशीष दे।

रिपोर्ट:
मेजर अनिल मसीह
लिटरेरी ऑफ़िसर

compass
The Salvation Army's Global Strategic Framework
People • Mission • Legacy

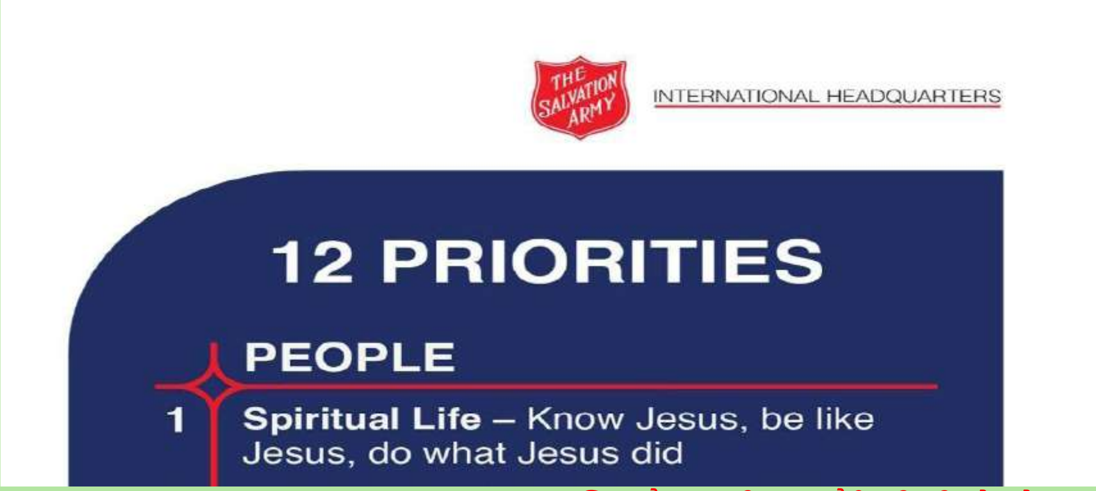

खजूरों का इतवार

29 मार्च 2026 को उत्तरी भारत टैरिटरी की सभी कोरों में 'पाम संडे' (खजूरों का इतवार) बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी प्रार्थना-भवनों में प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गईं। कई स्थानों पर हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए जुलूस भी निकाले गए, और सभी प्रार्थना-भवनों को खजूर की डालियों से सुंदर ढंग से सजाया गया था। दिल्ली सिटाडेल कोर में आयोजित सभा की अगुवाई चीफ सेक्रेटरी और TSWM ने की। लेफ्टिनेंट कर्नल मर्सी मंजुला मुड्डा (TSWM) ने सभा का संचालन किया, और परमेश्वर का वचन लेफ्टिनेंट कर्नल अब्राहम लिंकन, चीफ सेक्रेटरी द्वारा प्रस्तुत किया गया; उन्होंने अंतिम प्रार्थना और आशीष-वचन के साथ सभा का समापन किया।

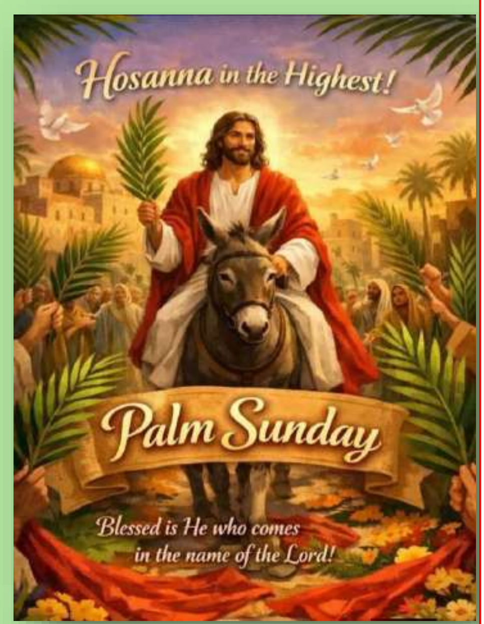

टैरिटोरियल अगुवों का पंजाब दौरा

गवाहियाँ

मेरा अनुभव - ICO सेशन 264, लंदन

1. परिचय

मैं मुक्ति फ़ौज की लीडरशिप का दिल से शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे ICO सेशन 264, लंदन में 42 दिनों के स्पेशल ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लेने का मौका दिया। यह ट्रेनिंग प्रोग्राम प्रतिभागियों को मसीही सेवकाई, नेतृत्व विकास और ऑर्गेनाइज़ेशनल मैनेजमेंट की गहरी जानकारी देने के लिए आयोजित किया गया था। इसका मकसद आत्मिक संरचना को मज़बूत करना और समुदायों की असरदार तरीके से सेवा करने की हमारी काबिलियत को बढ़ाना भी था।

ट्रेनिंग ने अनुभवी लीडर्स से सीखने और अलग-अलग परिवेश के प्रतिभागियों के साथ बातचीत करने का एक कीमती मौका दिया। यह रिपोर्ट ट्रेनिंग पीरियड के दौरान मिले ज्ञान, मिले अनुभवों और सीखे गए सबक का विवरण है।

2. ट्रेनिंग के मकसद

ट्रेनिंग प्रोग्राम के मुख्य मकसद थे:

- प्रतिभागियों में नेतृत्व और सेवकाई कौशल को मज़बूत करना।
- मसीही धर्मज्ञान और बाइबिल की शिक्षाओं की समझ को गहरा करना।
- समुदाय सेवा और मिशन कार्य के लिए असरदार योजना बनाना।
- मसीही इंस्टीट्यूशन में संस्थानात्मक और प्रबंधकीय कौशल को बेहतर बनाना।
- आत्मिक उन्नति और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देना।

3. ट्रेनिंग और सीखने के क्षेत्र

ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान, कई ज़रूरी विषयों को सिखाया गया। इनमें धर्मज्ञान शिक्षा, नेतृत्व विकास, सामुदायिक जुड़ाव और आत्मिक संरचना शामिल थे।

सेशन ने प्रतिभागियों को मसीही सेवकाई में सेवक नेतृत्व की अहमियत को समझने में मदद की। हमने कलीसिया और समाज सेवा के लिए असरदार वार्तालाप, टीमवर्क और स्ट्रेटेजिक प्लानिंग के बारे में भी सीखा। वर्कशॉप और ग्रुप डिस्कशन ने प्रतिभागियों को अपने अनुभव शेयर करने और एक-दूसरे से सीखने का मौका दिया।

ट्रेनिंग में गरीबी, अन्याय और कम्युनिटी वेलफेयर जैसे सामाजिक मुद्दों को सम्बोधित करने में चर्च की भूमिका पर भी ज़ोर दिया गया। इन सेशन के ज़रिए, प्रतिभागियों को ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करने के व्यावहारिक तरीकों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

4. ट्रेनिंग के दौरान अनुभव

ICO में ट्रेनिंग अनुभव समृद्ध और उत्साहित करने वाला था। मुझे दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के ट्रेनर्स और साथी प्रतिभागियों के साथ बातचीत करने का मौका मिला। इन चर्चाओं से मुझे यह समझने में मदद मिली कि अलग-अलग संस्कृतियों और सामाजिक परिवेशों में मसीही सेवकाई कैसे की जाती है। हमें यूनाइटेड किंगडम में मुक्ति फ़ौज की मिनिस्ट्री और सोशल सर्विस को देखने का भी मौका मिला। अलग-अलग सेंटर्स पर जाने और कर्मचारियों से बातचीत करने से आत्मिक और सामाजिक आउटरीच, दोनों तरह से समुदाय की सेवा करने के उनके समर्पण के बारे में कीमती जानकारी मिली।

एकेडमिक सेशन के अलावा, ट्रेनिंग में प्रार्थना, आराधना और साथ में समय बिताना भी शामिल था। इन गतिविधियों ने आत्मिक माहौल को मज़बूत किया और प्रतिभागियों को परमेश्वर की सेवा के प्रति अपने विश्वास और समर्पण में बढ़ने को बढ़ावा दिया।

5. सीखी गई खास बातें

ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान कई ज़रूरी बातें सीखीं।

सबसे पहले, मैंने सीखा कि असरदार मसीही नेतृत्व के लिए विनम्रता, लगन और एक सेवक जैसा दिल होना ज़रूरी है। एक अगुवा को दूसरों को प्यार, समझदारी और ज़िम्मेदारी से मार्गदर्शन करना चाहिए।
दूसरा, सफल सेवकाई के लिए टीमवर्क और सहयोग ज़रूरी है। जब लोग एक जैसे दर्शन और मकसद के साथ मिलकर काम करते हैं, तो चर्च का मिशन और मज़बूत होता है।
तीसरा, चर्च की न सिर्फ़ आत्मिक मामलों में बल्कि सामाजिक चुनौतियों को सुलझाने और कमज़ोर समुदायों की मदद करने में भी अहम भूमिका है।

6. सीख का इस्तेमाल
इस ट्रेनिंग से मिला ज्ञान और अनुभव मेरी सेवकाई और ज़िम्मेदारियों में बहुत मददगार होगा। मैं सीखे गए सबक को कई तरीकों से इस्तेमाल करने की योजना बना रही हूँ।
मैं मुक्ति फ़ौज के भीतर लीडरशिप और टीमवर्क को मज़बूत करने के लिए काम करूँगी। मुझे कोर और समुदाय में शैक्षणिक और आत्मिक कार्यक्रम को बेहतर बनाने की भी उम्मीद है। ट्रेनिंग ने मुझे और ज़्यादा समुदाय आउटरीच गतिविधियों को बढ़ावा देने और उन लोगों का सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है जो समाज और आर्थिक मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।
इसके अलावा, मेरा इरादा पाए हुए ज्ञान को अपने साथियों और साथी कर्मचारियों के साथ शेयर करने का है ताकि हम सब मिलकर मुक्ति फ़ौज के मिशन में और असरदार तरीके से योगदान दे सकें।

7. चुनौतियों का सामना करना पड़ा
ट्रेनिंग पीरियड के दौरान, कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे एक अलग कल्चरल माहौल में खुद को ढालना करना और एक व्यस्त और गहन ट्रेनिंग समय सारणी के हिसाब से ढलना। हालाँकि, ट्रेनर्स और साथी प्रतिभागियों के सहयोग से मैं इन चुनौतियों को दूर कर पाई, और वे कीमती अनुभव का हिस्सा बन गए।

8. निष्कर्ष
ICO में 42-दिन का ट्रेनिंग प्रोग्राम एक बहुत ही मायने रखने वाला और फायदेमंद अनुभव था। इसने मुझे आत्मिकता, बद्धिमानी और पेशेवर उन्नति करने में मदद की। ट्रेनिंग ने मसीही सेवकाई और नेतृत्व के बारे में मेरी समझ को मज़बूत किया है।
मुझे यह मौका देने के लिए मैं मुक्ति फ़ौज की लीडरशिप की बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। मैं इस दौरान मिले ज्ञान और कौशलों को इस्तेमाल करने के लिए समर्पित हूँ।
यह मुक्ति फ़ौज के विकास और परमेश्वर के लोगों की सेवा के लिए एक प्रशिक्षण है।

मसीह में आपकी बहन

मेजर जीन कैथलीन लिम्मा
कोर कमांडिंग ऑफिसर, अंडमान एक्सटेंशन

मेरी गवाही - कैडेट अजय मसीह

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, उसके महान अनुग्रह के लिए जो मुझ पर हुआ है। मेरा नाम कैडेट अजय मसीह है और कोर पड्डे, डिविजन डेरा बाबा नानक से हूँ। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं अपनी गवाही आपके साथ बांट सकूँ कि कैसे परमेश्वर ने मुझे अपना दास होने के लिए चुना और परमेश्वर ने चाहा कि मैं मुक्ति फौज में रहकर उसके काम को करूँ।

जब मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की तो काम सीखने के लिए कश्मीर चला गया और वहाँ पर कारपेंटर का काम करना शुरू किया। वहाँ पर मेरा अच्छा काम चलने लगा जिसके कारण मैंने अपने काम को ज्यादा महत्त्व देना शुरू किया। मैं काम में ज्यादा व्यस्त रहता था जिसकी वजह से जो मेरा प्रार्थना का जीवन था, उसमें मैं बढ़ नहीं पा रहा था और मुझे काम में भी सुकून नहीं मिलता था क्योंकि व्यस्तता के कारण मैं आत्मिक जीवन में बढ़ नहीं पा रहा था, फिर मैंने प्रार्थना के साथ यह फैसला किया के जिस काम के लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है मैं उस काम को करूँगा। मैंने अपना समय परमेश्वर के साथ व्यतीत करना शुरू किया और और परमेश्वर ने मेरे साथ बातचीत की (इफिसियों 4:1) इस वचन ने मेरे जीवन को बदला और मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ के जिस काम के लिए परमेश्वर ने मुझे चुना था उसी में वह लेकर आया और मुझे यह अवसर मिला कि मैं 2024 में प्रशिक्षण केंद्र में आ सकूँ और परमेश्वर के वचन को जान सकूँ। प्रशिक्षण केंद्र में आने से मैंने प्रभु की सेवकाई के नए नए तरीके सीखे और बोलने का ढंग सीखा कि कैसे अच्छा प्रचार करना है और यहाँ पर रहकर हर एक काम को समय के अनुसार करना सीखा और बाइबल की ऐसी बहुत सी बातें मैंने यहाँ पर आकर सीखीं जो भविष्य में हम अपने लोगों को सीखा सकते हैं।

कैडेट अजय मसीह
मुक्ति फ़ौज ट्रेनिंग कॉलेज बरेली

मेरी गवाही - कैडेट नीतू

मैं कैडेट नीतू, कोर चमरव्वा, डिवीज़न मुरादाबाद से हूँ। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि उसने मुझे यह मौका दिया है कि अपने शब्दों के द्वारा परमेश्वर को महिमा दूँ और उसकी तारीफ करूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि आज मैं जो यहाँ पर मुक्ति फौज की पादरी की ट्रेनिंग कर रही हूँ वो परमेश्वर की ओर से बुलाहट के द्वारा ही है।

पहले जब मैं छोटी थी तो दुआ प्रार्थना तो करती ही थी परंतु एक बार ऐसा हुआ कि मैंने दिन भर दुआ नहीं की, लेकिन जब मैं सो रही थी तो मैंने सपने में दर्शन देखा कि एक बहुत बड़ी प्रार्थना सभा हो रही है। बहुत सारे परमेश्वर के दास वहाँ मौजूद हैं और साथ ही मैं भी वहाँ प्रार्थना में शामिल हूँ, मैंने अपने आप को वहाँ परमेश्वर की नजदीकी में पाया। वहीं से मेरी जिंदगी बदल गई। मैं जब नींद से जागी तो मुझे विश्वास हो गया कि यह परमेश्वर की ओर से पवित्र बुलाहट है।

समय व्यतीत होता गया और मेरी शादी हो गई। कुछ साल तो ऐसे ही बीते। परन्तु समय आया हमें मौका मिला मुक्ति फौज की ट्रेनिंग के लिए फार्म भरने का। एक बार तो हमने फॉर्म भर भी दिए थे परंतु आ नहीं पाए, लेकिन कुछ सालों बाद फिर से परमेश्वर ने हमें मौका दिया तब मुझे विश्वास हुआ कि परमेश्वर जिनको चुन लेता है, उन्हें नहीं छोड़ता, चाहे हम कितने भी भागें, परमेश्वर हमें नहीं छोड़ता। जो भी परेशानी होती है, जो भी रुकावटें होती हैं, सब परमेश्वर दूर करता है। आप मेरे लिए प्रार्थना करें कि मैं परमेश्वर की सेवा को सही तरीके से कर सकूं।

कैडेट नीतू
मुक्ति फ़ौज ट्रेनिंग कॉलेज बरेली

मेरी गवाही - कैडेट नायामी बारिक

मेरा नाम कैडेट नायामी बारिक है। मैं सेंट्रल कोर, अंगुल, अंगुल डिवीजन, ओडिशा से हूँ। मेरा जन्म और पालन-पोषण एक मसीही परिवार में हुआ। हालाँकि मैं बचपन से ही परमेश्वर के बारे में जानती थी, लेकिन मैंने अपने निजी जीवन में यीशु मसीह के गहरे प्रेम का सचमुच अनुभव नहीं किया था।

एक दिन, चर्च की आराधना के दौरान, पादरी ने यशायाह 53 से उपदेश दिया, और समझाया कि कैसे यीशु ने मेरे पापों के लिए दुख सहा और क्रूस पर चढ़ाए गए। उस संदेश ने मेरे हृदय को गहराई से छू लिया। मुझे अपने पापों के लिए दुख हुआ और मैंने अपने प्रति मसीह के महान प्रेम को महसूस किया। उस दिन, मैंने अपने पापों का पश्चाताप किया, अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया, और प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने का निर्णय लिया।

जब मैं परमेश्वर की कृपा से अवसरों की प्रतीक्षा कर रही थी, तभी कैडेट सुमित के परिवार से मेरे लिए विवाह का प्रस्ताव आया; और यह स्पष्ट रूप से बताया गया कि वह भी प्रभु की सेवा करेगा। सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन हमारी शादी से एक महीना पहले, हमारे परिवार पर एक बड़ी विपत्ति आन पड़ी, जब मेरे पिता को परमेश्वर ने अपने पास बुला लिया। मैं बहुत दुखी थी, फिर भी मैंने हर बात में परमेश्वर पर भरोसा रखा; और उसने मुझे सांत्वना दी और मुझे शक्ति प्रदान की।

वर्ष 2024 में, मैंने ट्रेनिंग कॉलेज में प्रवेश लिया। यहाँ मुझे सीखने, उपदेश तैयार करने और देने, मसीही सिद्धांतों, चर्च के इतिहास, अंग्रेजी, संगीत, और विभिन्न आध्यात्मिक अभ्यासों—जैसे कि मासिक 24-घंटे की निरंतर प्रार्थना, उपवास प्रार्थना, और 'आध्यात्मिक दिवस'—के माध्यम से सचमुच बहुत आशीष मिली है। मैं इस बुलाहट के लिए परमेश्वर की आभारी हूँ, जैसा कि यूहन्ना 15:16 में कहा गया है: "तुम ने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि तुम जाकर फल लाओ, और तुम्हारा फल बना रहे।" मैं उसकी सेवा करने के योग्य नहीं हूँ, फिर भी अपनी कृपा से उसने मुझे यह अनमोल अवसर प्रदान किया है। मैं अपने प्राचार्य और अपने सभी प्रशिक्षण कर्मचारियों का हृदय से धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने मुझे शैक्षणिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में मार्गदर्शन प्रदान किया।

चूँकि अब मैं एक अधिकारी के रूप में नियुक्त होने जा रही हूँ, इसलिए मैं सभी पाठकों से विनम्र निवेदन करती हूँ कि कृपया मेरे लिए प्रार्थना करें, ताकि मैं अपने जीवन के द्वारा और अपने जीवन में उसके उद्देश्य को पूरा कर सकूँ।

सारी महिमा परमेश्वर को मिले।

कैडेट नायामी बारिक
मुक्ति फ़ौज ट्रेनिंग कॉलेज, बरेली

फलवन्त बनो

फलदायक होना क्या है और फल के फायदे क्या हैं?

फल हमारी अच्छी सेहत के लिए बहुत जरूरी है। फल खाना, फल हमारे जीवन में होना बहुत जरूरी है जिससे हमारी सेहत बहुत अच्छी होती है। हम अपने लिए और अपने परिवार के लिए आशिष का कारण होते हैं।

अब आप कहेंगे, यह कैसे हो सकता है। हमारे फल खाने से परिवार कैसे आशीषित हो सकता है। हम बीमार नहीं पड़ेंगे, हमारे परिवार का पैसा खर्च नही होगा। इस तरह से हम अपने लिए और अपने परिवार और समाज के लिए आशिष का कारण ठहरेंगे। यह तो हुई दुनियावी फल की बात, लेकिन आज जो हम बात कर रहे हैं वह है रूहानी फलों की बातें जो कि परमेश्वर हम से चाहता है कि हम अपने लिए और लोगों के लिए फलदायक बनें।

फलदार होने के लिए क्या करना होगा? (यूहन्ना 15:4)

फलदार होने के लिए हमें परमेश्वर के साथ जुड़े रहना है। जब हम परमेश्वर में बने रहते हैं तो परमेश्वर हम में बना रहता है। जब परमेश्वर हमारे साथ है तो हम स्वतः ही फलदार बन जाते हैं। हमारे अन्दर बहुत सारे गुण आ जाते हैं जो हमारे लिए और हमारे लोगों के लिए बहुत है। आशिष का कारण बन जाते हैं।

जैसे एक दुनियावी फल आने के लिए डाली का पेड़ के साथ जुड़े रहना बहुत जरूरी है उसी तरह रूहानी फल लाने के लिए हमें परमेश्वर के साथ जुड़े रहना बहुत जरूरी है। तभी हम फलदार मतलब अच्छे इन्सान बनते हैं जो कभी भी कमजोर नहीं पड़ता और फलदार बने रहेंगे। उस फलदार टहनी की तरह जो बेल के साथ जुड़ी रहती है। इसी तरह से हमें भी मसीह के साथ जुड़े रहना है। प्रार्थना करने से, परमेश्वर का वचन पढ़ने से, इसी तरह से हमें भी मसीह के साथ जुड़े रहना है। प्रार्थना करने से, परमेश्वर का वचन पढ़ने से, ध्यान, प्रार्थना और आज्ञाकारी के द्वारा हम अपने मसीह के साथ जुड़े रहते हैं। फलदायक बनते हैं जो हम खुद के लिए और अपने लोगों के लिए बरकत का जरिया बनते हैं। प्रभु के साथ जुड़े रहें और फलदार बने रहें।

जैसे इस साल 2026 में हमारी टैरीटोरियल थीम "बेरिंग दा फ्रूट" है। (यूहन्ना 15:5-8) अगर हम परमेश्वर से जुड़े हैं तो हमारा फल लाना बहुत जरूरी है ताकि लोग हम में से प्रभु यीशु को देख सकें। उस के प्रेम को, उस की दया को, उसके कार्य को और जैसे बहुत से फल गलातियों 3:22 आयत में हमें मिलते हैं, हमें फलों के द्वारा दूसरों की जिन्दगी बननी चाहिए। मसीह जैसा चरित्र होना चाहिए। मसीह का प्यार दिखना चाहिए। उस जैसी अच्छाई हमारे अन्दर नज़र आनी चाहिए। लेंट संसाधन आई.एच. क्यू. से हमें मिले हैं। प्रेम कहानी, उसमें भी प्रभु का प्यार और क्या-क्या किया दिखाया गया

है। इस संसार में रहते हुये उसने किस तरह से लोगों को अपना प्यार दिखाया और इस संसार के लिए फलदायक बना। अपने पिता के साथ जुड़ा रहा, उसकी आज्ञा का पालन करता रहा।

इसी तरह से हमें भी परमेश्वर के साथ जुड़े रहना है और फलदायक बनना है। अपने लिए और दूसरे के लिए आशिष का कारण बने, हमारे शब्द और कार्य दूसरों को आशिष दे। हमारे चलने फिरने से मसीह नज़र आये। फलदायक जीवन दूसरों के लिए आशिषमय होता है। हमारे जीवन से प्रभु को महिमा मिलती है। हमारे जीवन में मसीह दिखता है और हमारा जीवन मसीह जैसा ही होना चाहिए। अगर हम उस जैसे नहीं हैं तो हमें फिर से सोचने की जरूरत है।
हमारे कामों के (फलों) द्वारा हमें आशिष मिल रही है यानि कि हम उस पेड़ के समान हैं जिसको प्रभु यीशु ने श्राप दिया था। मत्ती 21:18-22, यीशु वहाँ पर इस उम्मीद से गये थे कि उस पर फल होगा। लेकिन उसके ऊपर केवल पत्ते थे, फल नहीं था। इस घटना में फल हीनता के कारण उस पेड़ को श्राप दिया गया। हर मसीह को चाहिए कि वह फलदार पेड़ की तरह बहुत से गुणों से और प्रभु के प्यार से भरा रहे। जो लोग हम से उम्मीद करते हैं, अच्छे होने की उसको हम पूरा करें।

हम उस पेड़ के समान बनें जो भजन संहिता 1:3 में बताया गया है,
"और उस टहनी की तरह बनें, जो फलों से भरी रहती है ताजा फल लाती है।" परमेश्वर के साथ जुड़े रहें, उसमें बने रहें और अपने लिए और अपने समुदाय के लिए आशिष का कारण बनें।

जिस तरह दुनियावी फल हमारे शरीर के लाभ दायक है उसी तरह से रूहानी फल हमारे आत्मिक जीवन के लिए, दूसरे के आत्मिक जीवन के लिए लाभ-दायक है। जब हम दूसरे के लिए कुछ करते हैं परमेश्वर हमें बहुत आशिष से नवाज़ता है जैसे भजन संहिता 1:3 में लिखा है।" वह उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे, वह सफल होता है।

परमेश्वर हमें सफलता देता है, आशिष से भर देता है। आमीन

लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता रॉबर्ट
टैरिटोरियल सेक्रेटरी फॉर स्पिरिचुअल लाइफ डेवलपमेंट
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

मसीह का दर्द

सलीब की ख़ामोशी में मोहब्बत का पैग़ाम छुपा रहा,
हर आँसू ने इंसानियत को नया इम्तिहान दिया।
क़ुर्बानी की रौशनी अब भी दिलों को राह दिखाती है,
मसीह का दर्द मोहब्बत की सच्ची गवाही कहलाती है।

इस जुमे की फ़ज़ा में कर्ब की महक अब भी उतरती है,
सलीब से ज़िन्दगी की राह निकलती है।
जिसने अमन का सबक देकर दुनिया को बदल दिया,
उसकी रहमत आज भी दिलों में नूर बनकर खिलती है।

हर दौर में सलीब की कहानी दिलों को झकझोरती है,
ये दर्द नहीं, मोहब्बत की गवाही बनकर बोलती है।
क़ुदरत ने भी उस लम्हे को ख़ामोश खड़े होकर देखा,
जब यीशु ने शैतानियत को शर्मसार कर दिया।

ख़ामोशी में जब रूह की आवाज़ सुनाई देती है,
तो एहसास होता है क़ुर्बानियाँ कभी फ़िज़ूल नहीं जातीं।
हर गिरावट से नई रौशनी की शुरुआत होती है,
कि बंदा-ऐ-परवरदिगार गिर के भी उठ खड़ा होता है।

गुड फ्राइडे की रात दुआओं का सफ़र बन जाती है,
रूह को नूर और दिल को नर्मी सिखा जाती है।
क़र्ब के रास्ते से ही इंसान को ताब मिलता है,
और यही आग हमें बेहतर इंसान बना जाती है।

मेजर अनिल मसीह
लिटरेरी ऑफ़िसर

बच्चों की विभिन्न गतिविधियाँ

Sponsorship Request:

We are seeking for sponsors and would appreciate and encourage you if you like this newsletter then sponsor for the printing work of the Spiritual Life Development Newsletter so that it can reach those who do not have access to the internet and cannot read online so that more people may also be blessed; then contact at the following address:

Territorial Commander
The Salvation Army
India Northern Territory
New Delhi- 110016
Email-int.mail@int.salvationarmy.org

Become a SPONSOR!

PRAYER REQUESTS

1. PRAY FOR GOOD FRIDAY AND EASTER MEETINGS.
2. PRAY FOR SICK PEOPLE.
3. PRAY FOR CHILDREN AND YOUTH.
4. PRAY FOR SPIRITUAL UPLIFTMENT OF SOLDIERS AND OFFICERS.

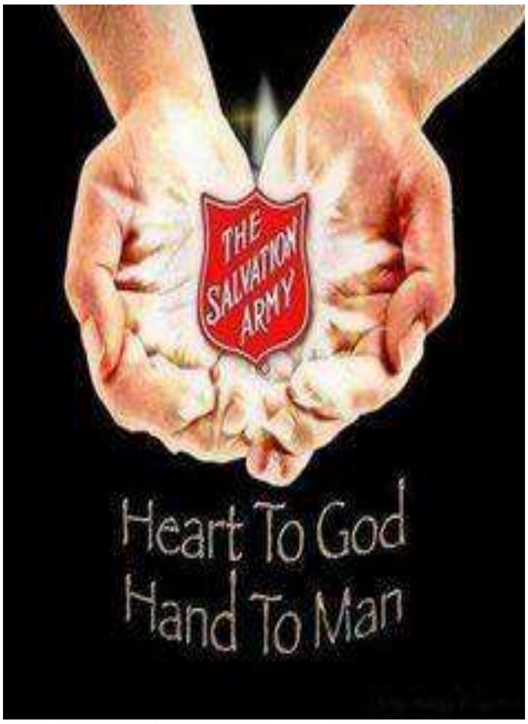

"I am the vine; you are the branches. If you remain in me and I in you, you will bear much fruit".

MAY GOD BLESS YOU ALL – SPIRITUAL LIFE DEVELOPMENT DEPARTMENT